भूमण्डलीकरण या वैश्वीकरण तथा शिक्षा (Globalisation and Education) →

भूमण्डलीकरण या वैश्वीकरण एक ऐसा शब्द है जो अपने शाब्दिक अर्थ के विपरीत पूँजीवादी व्यवस्था का एक क्षय (क्षय) नाम माना जा सकता है। भूमण्डलीकरण शब्द से भ्रम होता है कि इसमें क्षुद्र स्वार्थों से ऊपर उठकर संसार के सभी लोगों के सुमंगल हेतु एकजुट हो जाने की व्यवस्था निहित है, परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है, सिद्धान्त रूप में भूमण्डलीकरण से तात्पर्य उस स्थिति से है जिसमें सभी राष्ट्र विभिन्न क्रियाकलापों में घुल मिल जाते हैं। यह उस व्यवस्था को प्रतिबिम्बित करता है जहाँ विभिन्न राष्ट्र अपनी-अपनी भौगोलिक सरहदों के बावजूद आर्थिक, शैक्षिक, सामाजिक आदि क्षेत्रों के विकास में अन्य राष्ट्रों का खुलकर सहयोग लेते हैं। भूमंडलीकरण का ऐतिहासिक स्वत भारत की प्राचीन धार्मिक व संस्कृति में निहित माना जा सकता है। भारतीय संस्कृति में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' जैसे स्वत वाक्य भूमण्डलीकरण के सम्प्रत्यय को स्पष्ट रूप से प्रतिबिम्बित करते हैं। भूमण्डलीकरण निःसन्देह मानव जीवन के विभिन्न पक्षों में विश्वव्यापी सहयोग व समायोजन की प्रक्रिया कही जा सकती है। परन्तु दुर्भाग्य से भूमण्डलीकरण की उच्च भावना पर आज मानवीयता, सह-अस्तित्व, सहयोग, परोपकार व निश्छलता के स्थान पर छल व प्रपंच से प्रेरित अर्थजनित व्यवस्था हावी हो गई है।

वस्तुतः भूमण्डलीकरण ने एक अन्तर्राष्ट्रीय बाजार को जन्म देकर सम्पूर्ण विश्व को संकुचित करके वैश्विक ग्राम में परिवर्तित कर दिया है। भूमण्डलीकरण की इस नई संकल्पना ने बाजार के उस पुरातन स्वरूप को बदल दिया है जिसमें मानव आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बाजार की रचना होती थी।

Scanned with CamScanner

भूमण्डलीकरण ने जहाँ रोजगार, व्यापार, बाजार, उद्योग, शिक्षा आदि के क्षेत्र में नई संभावनाओं को तलाश है वहीं पुरातन संस्कृति, संस्कार व मूल्यों को नष्ट भी कर दिया है। बाजारीकरण के मायाजाल ने 'स्त्री सौन्दर्य' व 'बाल लीला' जैसी जीवन्त व हृदय स्पर्शी साहित्यिक दृष्टि को उत्पादन की हाट में बिक्री हेतु ढकेल दिया गया है। युवा पीढ़ी के नायकों की पहचान आदर्श चरित्र सराहनीय कर्म, सामाजिक सरोकार या जीवन मूल्यों से न होकर ब्राण्डेड वस्तुओं के मॉडल के रूप में हो रही है। निःसन्देह भूमण्डलीकरण के इस दौर ने भारतवासियों की आर्थिक सम्पन्नता व खुशहाली के मार्ग को प्रशस्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है परन्तु साथ-२ भारत की अतुल्य संस्कृति को आघात भी पहुँचाया है।

वैश्वीकरण की इस आँधी के आवेग से शिक्षा जगत भी बुरी तरह से प्रभावित हुआ है। शिक्षा संस्थाएँ फैशन स्थलों में बदलती जा रही हैं; भारतीय भाषाओं के स्थान पर अंग्रेजी अनिवार्य आवश्यकता बनती जा रही है; सांस्कृतिक पतन तेजी से हो रहा है तथा इतिहास के ~~स्थान पर~~ नायकों के स्थान पर हैरी पॉटर जैसे किरदार हावी हो रहे हैं। ऐसा नहीं है कि भूमण्डलीकरण के शिक्षा जगत में केवल नकारात्मक परिणाम ही सामने आये हैं। अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा में कुछ शिक्षा संस्थाओं ने अपने शैक्षणिक स्तर को सुधार कर विश्व की श्रेष्ठतम संस्थाओं में अपने को शामिल किया है तथा उनसे निकले छात्र/छात्राओं ने अपनी योग्यता की धाक सम्पूर्ण विश्व में स्थापित कर दी है। शिक्षा के भूमण्डलीकरण ने शिक्षा के अनेकानेक नूतन आयामों

Scanned with CamScanner

को जन्म दिया है। भूमण्डलीकरण के कारण ही हमारे पाठ्यक्रम में, हमारी शिक्षण विधियों तथा हमारी परीक्षा प्रणाली में सुधार आया है। आज हम अधिकतम सूचना व सम्प्रेषण की आधुनिकतम प्रौद्योगिकी का प्रयोग शिक्षा में कर रहे हैं। मुक्त व दूरस्थ शिक्षण प्रणाली को बढ़ावा दे रहे हैं; ऑन लाईन प्रवेश व परीक्षाएँ संचालित कर रहे हैं; ई-लर्निंग व वरचुअल विश्वविद्यालय की संकल्पना को साकार कर रहे हैं तथा इन्टरनेट व ब्रॉडबैण्ड की सहायता से दुनियाभर का साहित्य व सामग्री घर बैठे पढ़ रहे हैं। यह सब शिक्षा के वैश्वीकरण की दिशा में उठाये कदमों का ही परिणाम है। विश्व व्यापार संगठन के समझौते पर भारत के द्वारा हस्ताक्षर करने के फलस्वरूप शिक्षा भी व्यापार की एक वस्तु / सेवा बन गई है तथा अन्य वस्तुओं के समान इससे सम्बंधित विभिन्न सामग्रियों एवं सेवाओं का सम्पूर्ण विश्व में आयात-निर्यात प्रचुरता से तथा लाभार्जन के लिए होगा। शिक्षा को वाणिज्यिक वस्तु मानना भारतीय परम्परा के विपरीत होने के कारण इस सम्बंध में अनेक आपत्तियाँ की जा रही हैं।

Scanned with CamScanner

भूमण्डलीकरण और स्थानीय संस्कृति → भूमण्डलीकरण को प्रारम्भ में केवल आर्थिक प्रक्रिया की दृष्टि से देखा जाता था किन्तु अब यह स्पष्ट है कि भूमण्डलीकरण केवल आर्थिक प्रक्रिया न होकर एक बहु आयामी - प्रक्रिया है तथा यह ऐसी प्रक्रियाओं का समूह है, जो व्यक्तियों, समूहों और समुदायों के बीच अंतः सम्बन्ध स्थापित करता है। जिसका की मानव जीवन पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। इस स्थिति में स्थापित सामाजिक सम्बंध पूर्ण रूप से परिवर्तीत हो जाता है, क्योंकि यह जीवन से अत्यन्त गहराई से जुड़े होते हैं। इस प्रकार, भूमण्डलीकरण के अन्तर्गत व्यक्तियों का जीवन तथा समुदायों का भाग्य दूर देशों की घटनाओं पर अधिक निर्भर हो जाता है। राष्ट्रीय तथा स्थानीय सीमाएँ कमजोर पड़ जाती हैं। कार्यकलापों का पार-महाद्वीपीय तथा पार-देशीय जाल बिछ जाता है। सांस्कृतिक दृष्टि से नये सम्बंध स्थापित हो जाते हैं। ये परिवर्तन भूमण्डलीकरण के सांस्कृतिक आयाम के द्योतक हैं।

संस्कृति मानव समाज का अभिन्न अंग है, यह समाज व्यवस्था का एक मुख्य तत्व है। प्रत्येक समाज की एक संस्कृति होती है। जो नीजि विशेषताओं से भरी होती है परन्तु किसी समाज विशेष की संस्कृति में क्षेत्रिय विविधता पायी जा सकती है। उदाहरण - भारतीय संस्कृति में ही हमें कई धाराएँ देखने को मिलती है। जो विभिन्न क्षेत्रों में अवस्थित है। इन सांस्कृतिक क्षेत्रों में परम्पराएँ अलग-2 हैं, इन्हें हम उप कह सकते हैं। कुछ

Scanned with CamScanner

समाजशास्त्रीयों ने इन संस्कृतियों को 'स्थानीय संस्कृति' कहा है। स्थानीय संस्कृति शब्द का उपयोग तुलनात्मक अर्थ में हुआ है। जब हम किसी देश की संस्कृति की बात करते हैं तब दूसरे देशों में लोगों के लिए यह एक राष्ट्रीय संस्कृति है। किन्तु यदि संदर्भ किसी देश के भीतर अवस्थिति सांस्कृतिक क्षेत्रों से है। तब प्रसंग बदल जाता है। उदाहरण- अमेरिका और ब्रिटिश वासियों के लिए भारतीय संस्कृति भारत की राष्ट्रीय संस्कृति है। परन्तु भारत-वासियों के लिए स्थानीय संस्कृति से तात्पर्य बिहार, उड़ीसा, तामिलनाडु अथवा केरल में पाये जाने वाले स्थानीय सांस्कृतिक प्रतिमानों से है। हम जनजातीय समुदायों की स्थानीय संस्कृतियों की भी बात कर सकते हैं।

Scanned with CamScanner